शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

**Online ISSN-3048-9296**
Vol.-1; issue-2 (July-Dec.) 2024
Page No- 61-64

©2024 Shodhaamrit (Online)
www.shodhaamrit.gyanvividha.com

**डॉ. आशीष कुमार**
राजकीय महाविद्यालय,
नारनौल.

Corresponding Author :
**डॉ. आशीष कुमार**
राजकीय महाविद्यालय,
नारनौल.

# वेदों में वर्णित क्षत्रियधर्म के नियम

मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है। मोक्ष प्राप्ति में वैदिक वर्ण व्यवस्था एक श्रेष्ठ प्रबन्धन है क्योंकि जब तक एक श्रेष्ठ प्रबन्धन न हो तब तक किसी भी कार्य को सम्पन्न करने में सरलता नहीं होती। चतुर्विध पुरुषार्थों में मोक्ष प्राप्ति मानव जीवन का अंतिम एवं सर्वोत्तम लक्ष्य है। इस लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए एक श्रेष्ठ प्रबन्धन की आवश्यकता है। ये वर्ण व्यवस्था मोक्ष प्रबन्धन का ही एक अंग है। जिस परम पिता परमात्मा ने सृष्टि का निर्माण किया उसी समय सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर सृष्टि की प्रलय पर्यन्त, जन्म से मृत्यु पर्यन्त और एक तृण से लेकर ब्रह्माण्ड पर्यन्त, जिन विद्याओं की आवश्यकता है, उन सब विद्याओं को परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा ऋषियों को ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद का ज्ञान दिया। इस वेद ज्ञान के अन्तर्गत ही मनुष्य जीवनोपयोगी सभी विद्यायें प्रकट कीं, उसी वेद ज्ञान के अन्तर्गत मनुष्य जीवन में पुरुषार्थ चतुष्टय को प्राप्त करने के लिये जिस प्रबन्धन की आवश्यकता थी वह सब भी दिया। उसी प्रबन्धन के अन्तर्गत वर्ण व्यवस्था भी आती है। महर्षि दयानन्द द्वारा आर्य समाज का प्रथम नियम कि "सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।" यह बात स्वतः प्रमाण वेद से भी सिद्ध होती है। यथा -

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्मादजायत।।[1]

मन्त्र में स्पष्टतः सिद्ध होता है कि ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद चारों वेदों का उत्पत्तिकर्ता परमेश्वर ही है। इन्हीं वेदों में प्रबन्धन के अंगभूत वर्ण व्यवस्था का वर्णन है -

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहु राजन्यः कृतः।
ऊरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत।।[2]

मन्त्र में ब्राह्मणादि वर्णों को सूत्र रूप में वर्णित किया पश्चात् अनेक विद्वान् मनीषियों ने इसको विस्तृत रूप दिया है। इस वर्ण व्यवस्था प्रबन्धन के अन्तर्गत ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्णों का सम्यक् संक्षिप्त विवेचन है। जो कि आज के समय में किंचित् मात्र भी देखने को नहीं मिलता। वर्ण व्यवस्था के अभाव में यम, नियम, शम, दम, तितिक्षा आदि अध्यात्म का अभाव होने से समाज की अत्यन्त अधोगति हो रही है। समाज में प्रत्येक व्यक्ति अशान्त है, ऐसे अशान्त वातावरण में मनुष्य अपने-अपने अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को कैसे प्राप्त कर सकते हैं; यह तथ्य विचारणीय है। इसलिये वर्ण व्यवस्था की समुचित व्याख्या की आवश्यकता है, इस लेख का प्रतिपाद्य क्षत्रिय के कर्त्तव्यों की व्याख्या करता है।

प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
विषयेष्वप्रशक्तिश्च क्षत्रियस्य समासतः।।[3]

महाराजा मनु के अनुसार क्षत्रिय का कर्त्तव्य प्रजा का रक्षण, दान देना, यज्ञ कराना, अध्ययन तथा विषयों में अनासक्ति है।

**वेदों में क्षत्रिय -**

इन्द्र, वरुण, आदित्य इन देवताओं को वेद में स्थान-स्थान पर आदित्य नाम से भी कहा गया है और आदित्यों को अनेक स्थानों पर क्षत्रिय कहा गया है, उदाहरण के लिये ऋग्वेद का निम्न मन्त्र देखिये-

त्यान् नु क्षत्रियां अव आदित्यान् याचिषामहे।
सुमृळीकान् अभीष्टये।।[4]

अर्थात् (अभीष्टये) अभीष्ट सुखों की प्राप्ति के लिये (सुमृळीकान्) उत्तम सुख देने वाले (त्यान्) उन (क्षत्रियान्) क्षत्रिय (आदित्यान्) आदित्यों से (अव यचिषामहे) हम याचना करें।

जिस सूक्त का यह मन्त्र है उसका देवता आदित्य है, और सूक्त में, मित्र, वरुण, अर्यमा, इन्द्र और अदिति इन देवताओं के नाम आये हैं। इसी प्रकार अन्य स्थलों में पूषा, भग, अंश आदि को आदित्य क्यों कहा जाता है।

इस सम्बन्ध में इस ग्रन्थ में प्रसंगवश स्थान-स्थान पर लिखा गया है। पाठकों को यहाँ इतना समझ लेना पर्याप्त है कि इन्द्र आदि देव आदित्य और क्षत्रिय हैं। इसलिए इन्द्र, वरुण, रुद्र आदि देवों के जिन गुणों और कर्तव्यों का वर्णन स्थान-स्थान पर वेदों में किया गया है। वे सब क्षत्रियों के गुण और कर्तव्य समझने चाहियें। उदाहरण के रूप में वेदों में क्षत्रियों के गुणों की और निर्देश करने के लिये कुछ मन्त्र उद्धृत हैं।

**क्षत्रियकार्य राष्ट्र रक्षा -**

क्षत्रियों को राष्ट्र की रक्षा करनी चाहिए। वेद का स्वाध्याय करते हुए क्षत्रियों का एक यह प्रधान कर्तव्य प्रतीत होता है। उदाहरण के लिये वेदों में स्थान-स्थान पर आया है कि -"क्षत्रिय का राष्ट्र ही रक्षित रहता है।[5]

मित्र और वरुण ये दोनों क्षत्रिय साम्राज्य के लिये और उसकी रक्षा के लिये अपने-अपने अधिकार पदों पर बैठते हैं।[6] वेदों के अनुसार परमात्मा ने क्षत्रिय को क्षत्र अर्थात् राष्ट्र रक्षा के लिये बनाया है।[7]

**वेदों के अनुसार क्षत्रिय को धृतव्रत होना चाहिए-**

व्रत के कई अर्थ होते हैं। ब्रह्मचर्यादि व्रतों को भी व्रत कहते हैं जिन्होंने ब्रह्मचर्यादि व्रतों को धारण किया है, उन्हें धृत व्रत कहा जायेगा, उत्तम कर्मों और नियमों को भी व्रत कहते हैं। जो राष्ट्र में उत्तम कर्मों और नियमों को धारण करते हैं, उन्हें घृतव्रत कहा जायेगा। क्षत्रियों को अपने जीवन में राष्ट्र में उत्तम व्रतों का धारण करने वाला होना चाहिए।[8]

क्षत्रिय को सत्यवादी होना चाहिए- क्षत्रिय ऋतवान् अर्थात् सत्य पर चलने वाले होते हैं। अर्थात् सत्य का पालन करते हैं।[9] वेदों में कहा गया है कि क्षत्रिय गोपा होते हैं अर्थात् सत्य के रक्षक होते हैं।[10] अन्यत्र भी कहा है कि क्षत्रिय ऋतसाप अर्थात् सत्य से सम्बन्ध रखने वाला होता है। सूक्त में क्षत्रिय का वरुण, मित्र, इन्द्र आदि देवों को आदि नामों से कहा गया है और कहा गया है कि क्षत्रियों तुम्हें ऋत् अर्थात् सत्य के रथ पर चढ़ने वाला होना चाहिए।[11] वे क्षत्रिय सत्य का पालन करने वाले (वक्मरात सत्याः) हैं।[12]

**क्षत्रियों को राष्ट्र में से हिंसा समाप्त करनी चाहिये -**

क्षत्रिय का कर्तव्य है कि प्रजा का पालन करता हुआ यह भी ध्यान रखे कि राष्ट्र में कहीं हिंसा का माहौल तो नहीं है क्योंकि क्षत्रिय हिंसकों को

मारने वाला तथा सत्पुरुषों का रक्षक होता है।[13] उत्तम क्षत्रिय का गुण है कि वह उत्तम बल वाला होवे। प्रशस्त धन देने की इच्छा वाला कौन क्षत्रिय इन निन्दनीय बातों से युक्त हिंसा से हमारा उद्धार करेगा।[14]

**क्षत्रियों का मार्ग हिंसा रहित होता है -**

आदित्य अर्थात् क्षत्रिय द्रोह रहित हिंसा रहित होकर व्रतों की रक्षा करते हैं।[15] हे आदित्यों-क्षत्रियों तुम हमें हिंसक लोगों के मुख से छुड़ाओ।

**क्षत्रियों को ज्ञानी होना चाहिये -**

यदि क्षत्रिय बलवान है और धर्मात्मा भी है परन्तु ज्ञानी नहीं है तो सत्यासत्य का निर्णय नहीं कर पायेगा। अन्याय अत्याचार को भी नहीं रोक पायेगा और न ही राष्ट्र को भ्रष्टाचारियों से मुक्त करा पायेगा। इसलिये क्षत्रियों को ज्ञानी होना चाहिये। ऋग्वेद में भी स्थान-स्थान पर आया है कि क्षत्रिय लोग हरेक बात का गहरा ज्ञान रखने वाले क्रांतिदर्शी ज्ञानी होते हैं।[16] वे क्षत्रिय लोग महान् ज्ञान रखने वाले अनेक नीति धर्माधर्म को जानने वाले (अरुचक्षसः) मनुष्य हैं।[17] मित्र नामक राज्याधिकारी उत्तम क्षत्रिय और उत्तम बलवान् (सुक्षत्रः) और निर्माण की शक्ति रखने वाला ज्ञानी है।[18]

**क्षत्रियों को बलशाली होना चाहिए -**

बहुराजन्यः कृतः के अनुसार भी क्षत्रियों को पर्याप्त बाहुबल वाला होना चाहिए तभी तो वह क्षत्रिय आततार्इयों, विधर्मियों तथा राक्षसी शक्तियों से मुकाबला कर पायेगा। वेदों में भी कहा गया है कि हे सैनिकों तुम्हारा बल नाश न होने योग्य और जीर्ण न किया जा सकने योग्य तथा राष्ट्र की परिचर्या सेवा करने वाला होना चाहिए।[19] क्षत्रिय लोग अन्यों से अप्राप्त बल को धारण करते हैं।[20] क्षत्रियों को तेजस्वी होना चाहिये जिससे कि क्षत्रियों को देखते ही शत्रु का मनोबल अल्प हो जाये। वेदों में भी इसी बात को कहा है कि वे इन्द्र आदि आदित्य देव श्रेष्ठ तेज वाले हैं।[21] वे श्रेष्ठ क्षत्रिय किसी से दबते नहीं हैं।[22] वे क्षत्रिय लोग जो कि शुभ्र वर्ण वाले और शत्रुओं के लिये डरावने तेजस्वी रूप वाले होते हैं[23] तथा क्षत्रिय किसी से न दबने वाले रक्षक हैं।[24] वे आदित्य जीवन लोग किसी से न दबने वाले और अपने यश से यशस्वी हैं[25] और प्रार्थना की है कि जो क्षत्रियों में प्रताप होता है वह दिव्य प्रताप हम में आवे।[26]

**क्षत्रिय को निर्भय होना चाहिए -**

एक अच्छे क्षत्रिय को निडर होना चाहिए क्योंकि निर्भय क्षत्रिय ही अन्याय और अत्याचार का मुकाबला कर सकता है। क्षत्रिय को निर्भय होना चाहिए, ऐसा वेद में स्थान-स्थान पर कहा है। यथा जिस प्रकार ब्राह्मण और क्षत्रिय न किसी से डरते हैं और न किसी से हिंसित होते हैं[27] तथा उन्हें शस्त्रास्त्र में निपुण होना चाहिए।

**क्षत्रिय को शूरवीर होना चाहिए -**

यदि क्षत्रिय शूरवीर नही होगा तो अपने राष्ट्र की रक्षा में डटकर युद्ध नहीं कर सकता इसलिए क्षत्रिय शूरवीर और सूझबूझ वाला होना चाहिए। यजुर्वेद में भी कहा है कि हे परमात्मन्! हमारे राष्ट्र में शूरवीर बाण चलाने में निपुण शत्रु पर प्रहार करने वाले बड़े-बड़े रथों पर चढ़कर शत्रुओं से लड़ने वाले क्षत्रिय उत्पन्न हों।[28] इस परिपेक्ष्य में किसी कवि ने कहा है कि -

शूरा वाहि सराहिये जो लड़े देश के हेत।
बोटी-बोटी कट मरे तबहु न छोड़े खेत।
देशद्रोहियों के ऊपर बिजली बन पड़ने वाला हो।
नंगे पैरों शोलों पर हिम गिरि पर चढ़ने वाला हो।
बिना शस्त्र दुश्मन के ऊपर खुन्दक भरने वाला हो।
जोश होश और सूझ-बूझ से सब कुछ करने वाला हो।।[29]

गीता में भी क्षत्रिय का धर्म बताते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं -

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धेचाप्यपलायनम्।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्र कर्म स्वभावजम्।।[30]

अर्थात् (शौर्य) सैंकड़ों सहस्त्रों से भी युद्ध करने में अकेले को भय न होना (तेज) सदा तेजस्वी अर्थात् दीनता रहित प्रगल्भ दृढ़ रहना (घृति) धैर्यवान् होना (दाक्ष्य) राजा और प्रजा सम्बन्धी व्यवहार और सब शास्त्रों में निपुण अति चतुर होना (युद्धे) युद्ध में भी दृढ़ निशंक रहके उससे कभी न हटना, न भागना, अर्थात् इस प्रकार से लड़ना कि जिससे निश्चित विजय होवे। आप बचे जो भागने से वा शत्रुओं को धोखा देने से जीत हो तो ऐसा ही करना (दान) दानशीलता रखना

(ईश्वर भक्त) पक्षपात रहित होके सब के साथ यथायोग्य वर्तना, विचार के देना (प्रतिज्ञा) पूरी करना उसको कभी भंग न होने देना। ये ग्यारह क्षत्रिय वर्ण के कर्म और गुण हैं। वेदोक्त क्षत्रिय गुणों का विवेचन करने का अभिप्राय केवल इतना ही है कि शूरवीर क्षत्रिय ही संगठित होकर देश की रक्षा में समर्थ हो सकते हैं। स्मृति कहती है कि जब तक क्षत्रिय के हाथ में शस्त्र है। तभी तक उस राष्ट्र में शास्त्र का चिन्तन हो सकता है। शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्र चिन्ता प्रवर्तते। महाकवि कालिदास ने कहा है-'क्षत्रात् किलत्त्रायत इत्युदग्र क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रुढः। अर्थात् क्षत्र शब्द लोक में इसलिये उदग्र माना गया है क्योंकि वह विनाश से प्रजा की रक्षा करता है, साथ ही यह भी सत्य है कि असंगठित क्षात्र वर्ग कभी प्रजा की रक्षा में समर्थ नहीं हो सकता। असंगठित क्षत्रियों को दस्यु उसी प्रकार नष्ट कर डालते हैं। जिस प्रकार कवच से रहित अंगों को शत्रुओं के बाण नष्ट कर देते हैं। केवल क्षत्रिय ही नहीं, अपितु कोई भी वर्ग यदि स्वयं की और राष्ट्र की रक्षा करना चाहता है तो उसे संगठित होकर ही शत्रुओ का मुकाबला करना पड़ेगा। वेद में क्षत्रिय के जिन गुणों का विवेचन अभी किया गया है, वेसभी गुण संगठन कौशल के लिये अनिवार्य हैं, वर्तमान में क्षत्रिय के उक्त सांगठनिक गुणों का विवेचन करना इसलिये प्रासंगिक है क्योंकि यह कलिकाल है और कलिकाल में शक्ति केवल संगठन में निवास करती है, शक्तियुग त्रेता और द्वापर में संगठन की जितनी उपादेयता थी उससे अधिक कहीं आज क्षत्रियों को संगठित होने की आवश्यकता है।

**संदर्भ सूची :-**


1. यजु0 - 31.7
2. यजु0 - 31.11
3. मनुस्मृति - 1.89
4. ऋग्वेद- 8.67.1
5. तथा राष्ट्र गुपितं क्षत्रियस्य। ऋ0-10-109-3।। अथर्व0 - 5.97.3
6. निषेदतुः साम्राज्याय .......क्षत्रिया। ऋग्0 - 8.25.8
7. क्षत्राय राजन्यम्। यजु0 - 30.5
8. घृतव्रत क्षत्रिया। ऋग्0 - 8.25.8; ऋग्0- 10.66.8
9. ऋतावान्....... क्षत्रिया। ऋग्0- 7.64.2
10. ऋतस्य क्षत्रिया। ऋग्0- 10.66.8
11. ऋतस्य वो रथयः पूत दक्षानृतस्य पस्त्य सहः।। ऋग्0- 5.51.10
12. रिशाद सः सत्पतीन।। ऋग्0- 6.51.4
13. सुक्षात्रासो रिशादसः। ऋग्0- 1.19.5
14. को अस्या नो द्रुहो। वद्य वत्या उन्नेष्यति क्षत्रियो वस्यइच्छन्। अथर्व0-7/103/1
15. व्रता रक्षन्ते अद्रुहः। ऋग्0 - 8.67.13
16. आदिव्यासः कब्य। ऋग्0 - 3.54.10
17. तां ....... उरुचक्षो नृन्। ऋग्0 - 6.51.9
18. अयं मित्रो ..... सक्षत्रो अजनिष्ठ वेधाः। ऋग्0 - 3.59.4
19. दूणासं क्षत्रमजरं दुवायुः। ऋग्0 - 7.18.25
20. आनाप्यं वरुणो मित्रो अर्यमा क्षत्र राजान् आशत्। ऋग्0 - 7.66.11
21. ते हि श्रेष्ठ वर्चसः। ऋग्0 - 6.51.10
22. अदब्धान्। ऋग्0 - 6.51.4
23. ये शुभ्रासो घोर वर्पसः। 6.51.4
24. अदब्धा सन्ति पायवः। 8.18.12
25. ये अदब्धासः स्वयशसः। 8.67.13
26. राजन्ये (या त्विषि) सानं देवी एतु। अथर्व0 - 8.38.4
27. यथ ब्रह्म च क्षत्रं च न बिभीतो न रिष्यतः। ऋग्0 - 2.15.4
28. आ राष्ट्रे राजन्यः....... यजु0 - 22.22
29. स्फुट
30. गीता - 18.43


•